महिला उत्थान में स्वामी दयानन्द का योगदान

धर्मवीर यादव
सहायक आचार्य (योग विभाग)
आई.जी.यू., मीरपुर, रेवाड़ी (हरियाणा)
मो. नं. : 9466431860
Email Id: dharambiryadav.yogi@gmail.com

शोध सारांश :-

प्राचीन काल से ही हमारा देश भारतवर्ष शिक्षा, संस्कृति सभ्यता, संस्कारों की दृष्टि से पूर्ण समृद्ध एवं विकसित था। ऐतिहासिक दृष्टिकोण से भी भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता विश्व की प्राचीनतम एवं सर्वोत्तम मानी जाती है। इसीलिए समस्त विश्व भारत को जगत गुरू मानता था। भारत में मनुष्य जाती के प्रारम्भ से ही महिलाओं को देवी के रूप में सम्मान दिया जाता रहा है। जहॉ महिलाओं की पूजा होती है अर्थात सम्मान होता है, वहॉ देवताओं का निवास माना जाता है। हमारी संस्कृति में सरस्वती को विद्या की देवी, लक्ष्मी को धन की देवी एवं दुर्गा को शक्ति की देवी माना जाता है। आधुनिक युग में नारी जाती के उत्थान में राजा राम मोहन राय, स्वामी दयानन्द, स्वामी विवेकानन्द ने बहुत बड़ी भूमिका निभाई।

प्रस्तावना :- विश्व को मानवता व आध्यात्म का पाठ पढ़ाने वाले भारतवर्ष की संस्कृति की विशेषता रही है कि "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता" अर्थात जहॉ नारी की पूजा (सम्मान) होती है वहॉ देवता निवास करते है। दुनियॉ की आधी आबादी नारी हमें जननी, बहन, पत्नी,पुत्री, बेटी आदि रूपों में हमारा सहयोग करती है।

मनु महाराज ने भी कहा है–

एतदेश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः।। मनु. 2.20

उस समय नारी की दशा भी सम्माननिय, प्रतिष्ठित और दिव्य थी। गार्गी, मैत्रेयी, सीता, अनसूया, सावित्री और मदालसा आदि नारी की उन्नत अवस्था के प्रत्यक्ष उदाहरण है।

संतुष्टों भार्यया भर्ता–भर्ता भार्या तथैव च।
यस्मिन्नेव कुले नित्यं कल्याणं तत्रवैध्रुतम्।।

जिस कुल में स्त्री से पुरूष तथा पुरूष से स्त्रि सदा प्रसन्न रहती है। उसी कुल में लक्ष्मी और कीर्ति निवास करती है। जहॉ विरोध कलह होता है वहॉ दुःख दरिद्रता और निंदा का वास होता है। महाभारत काल से भारत के पतन की कहानी प्रारम्भ हो गयी थी। हमारी पौराणिक संक्रीर्ण विचारधारा ने इस पतन को और अधिक गतिशील कर दिया। वेदो, उपनि ादों के विद्वान स्वामी शंकराचार्य ने (वेदाद्वार) के बहुत प्रशंसनीय कार्य किये। परन्तु नारी के महत्व को उन्होंने भी नहीं समझा और 'नारी को नरक का द्वार' बताकर उसकी निंदा की। उत्तर मध्यकाल में सन्त तुलसीदास ने "ढोल गंवार, शुद्र, पशु, नारी ये सकल ताड़ना के अधिकारी" कहकर नारी को बहुत बड़ा आघात पहुॅचाया। इन सब का परिणाम यह हुआ कि समाज में नारी को पैरो की जूती समझा जाने लगा। पुरूष प्रधान मानसिकता वाले लोगों ने विभिन्न तर्क देकर नारी को उसके अधिकारों से वंचित कर दिया और उसे अबला अर्थात बलहीन कहना भी प्रारम्भ कर दिया। जबकि वास्तविकता यह है कि संसार की कोई भी क्रान्ति मातृशक्ति के बिना सफल नहीं हुई है।

जिस समय भारत भू पर महर्षि दयानन्द का आविर्भाव हुआ उस समय नारी की दशा अत्यन्त दयनीय एवं

शोचनीय थी। स्वामी जी ने यह भलीभॉति अनुभव कर लिया था कि स्त्री का उत्थान हुए बिना समाज अथवा राष्ट्र का उद्वार सम्भव नहीं हैं क्योंकि स्त्री भी पुरूष की भॉति समाज रूपी गाड़ी का पहिया है। महर्षि दयानन्द पहले समाज सुधारक थे जिन्होंने नारी उत्थान की क्रांति को जन्म दिया। महर्षि दयानन्द ने नारी के उद्वार के लिए अनेक प्रयत्न किए जो संक्षेप में प्रस्तुत है–

स्त्री शिक्षा :- 'शिक्षा वह शेरनी का दूध है जो पियेगा वह गुर्रायेगा जरूर' दूरदृष्टि रखने वाले स्वामी दयानन्द ने भी इस रहस्य को उजागर किया की शिक्षा के बिना व्यक्ति अधुरा है। जब तक नारी शिक्षित नहीं होगी तब वह अपने अस्तित्व को, अपने महत्व को नहीं समझ सकती और अपने अधिकारों के प्रति जागरूक नहीं हो सकती। अतः वेदो की विद्या जो ताले में बन्द थी। स्वामी दयानन्द ने उसकी कुंजी न केवल पुरूषों के लिए अपितु स्त्रियों के लिए भी सुलभ कराते हुए वेद का प्रमाण प्रस्तुत किया–

यथेमा वाचं कल्याणीमावदानि जनेयः।

ब्रह्म राजन्यायां शूद्राय, चार्याय च स्वाय चारणायच।। भजुः अ. 26–2

अर्थात परमात्मा ने वेदों का प्रकाश मानव मात्र के लिए किया है। स्वामी जी ने सबके लिए शिक्षा की अनिवार्यता सिद्ध करते हुए महान कृति सत्यार्थ–प्रकाश में लिखा है– "इसमें राजनियम और जातिनियम होने चाहिए कि पॉचवे अथवा आठवे वर्ष से आगे कोई अपने लड़के और लड़कियों को घर में न रख सकें, पाठशाला अवश्य भेजे और जो न भेजे वह दण्डनीय हो।" स्त्रियों को सभी प्रकार के ज्ञान की आवश्यकता पर बल देते हुए वे आगे लिखते है– "जैसे पुरूषों को व्याकरण, धर्म और अपने व्यवहार की विद्या अवश्य ही सीखनी चाहिए, वैसे स्त्रियों को भी व्याकरण, धर्म, वैद्यक, गणित, शिल्प विद्या को अवश्य ही सीखनी चाहिए।" स्वामी जी के उक्त कथन में उनकी इस भावना की अभिव्यक्ति है कि गृह सम्बंधी आय–व्यय के लिए गणित, संतान को सम्यक् आचरण सिखाने के लिए धर्म, गृह के सभी प्राणियों के लिए पौष्टिक और स्वास्थ्यवर्धक भोजन–पान तथा रोगी के पथ्यापथ्य के हेतु वैद्यक, गृह–निर्माण तथा अन्य वस्त्र भूषणादि सम्बंधी आवश्यकताओं के लिए शिल्प व कलाओं का ज्ञान प्राप्त करने से प्रत्येक नारी स्वावलंबी बनेगी। स्त्री शिक्षा पर जोर देते हुए राष्ट्रपिता महात्मा गॉधी कहते है– "महिलाओं का सशक्तिकरण तभी हो सकता है जब उनको कार्य और अधिकारों का ज्ञान होगा और उसको प्राप्त करने के लिए शक्ति होगी, इसके लिए शिक्षा ही सबसे बड़ा हथियार है।"

स्त्री और धर्म :- धर्म के संबंध में भी स्वामी दयानन्द स्त्रियों को पुरू ों के समान ही धर्म–ग्रंथों के पठन–पाठन, धार्मिक क्रियाओं के संम्पादन, मंत्र–जप, अग्निहोत्रादि की अधिकारणी मानते थे। स्वामी दयानन्द के वैदिक सिद्धान्त के अनुसार कोई भी धार्मिक–अनु ठान पत्नि के बिना पूर्ण नहीं माना जाता है। 'इमं मन्त्रं पत्नि पठेत' आदि श्रोतसूत्र में वर्णित स्प ट प्रमाण है। वैदिक परम्परा में स्त्रियों को ब्रह्मा पद पर आसीन करने का भी उल्लेख मिलता है।

स्त्री और गृहस्थ धर्म :- स्वामी दयानन्द गृहस्थ आश्रम को विषय–भोग–वासनाओं तक सीमित न करके लोकमंगल, कर्तव्यों, उपासना और पवित्रता का माध्यम मानते थे। उनकी 'संस्कार विधि' पुस्तक में विवाह प्रकरण के मंत्र दाम्पत्य जीवन की मर्यादा एवं उद्देश्यों को स्पष्ट करते हैं।

समञ्जन्तु विश्वे देवाः समापो हृदयानि नौ।

सं मातरिश्वा संघाता समु दे ट्री दधातु नौ।। ऋग्वेद 20–85–47

अर्थात दम्पति अच्छे शुभ संकल्प के साथ वैवाहिक जीवन में प्रवेश करते है ताकि दोनों का प्रत्येक शुभ कार्य में विचारों का पूर्ण सामञ्जस्य इस प्रकार हो जैसे– दो पात्रों का जल एक पात्र में मिलकर एक रूप हो जाता है।

पुनर्विवाह :- विधवाओं की दुःख भरी जिंदगी देकर ऋषि दयानन्द का हृदय अन्दर से पूरी तरह से झंकृत हो उठा

था। बाल विवाह जैसी कुप्रथा के कारण नाबालिक लड़कियॉ सारा जीवन वैधव्य से अभिशप्त होकर नरक भोगने के लिए बाध्य थी। स्वामी जी ने पुनर्विवाह की अनुमति देते हुए उपदेश मंजरी के बारहवें व्याख्यान में बलपूर्वक यह कहा था – "ईश्वर के समीप स्त्री–पुरूष बराबर है क्योंकि वह न्यायकारी है, वह पक्षपात रहित है। जब पुरूषों को दूसरे विवाह की अनुमति समाज देता है तो स्त्रियों को क्यों रोका जाता है?" स्वामी दयानन्द की इसी प्रेरणा से अभिप्रेरित होकर आर्य समाज ने विधवा विवाह को समाज में प्रतिष्ठित कर दिया।

सती-प्रथा का विरोध :- भारतीय समाज के कई वर्गो में पति की मृत्यु होने पर जीवित पत्नि को पति की चिता में ही जला दिया जाता था। इस जधन्य, नृशंस और अमानवीय प्रथा का महर्षि दयानन्द ने प्रबल सहास के साथ विरोध किया। उनके इस सामाजिक सुधार कार्य में अंग्रेजी सरकार ने भी इस कुप्रथा को मिटाने में सहयोग किया।

वेश्यावृत्ति का विरोध :- भारतीय समाज के मस्तक पर लगे वेश्यावृत्ति के कलंक ने स्वामी दयानन्द के हृदय को झकझोर दिया था। अज्ञानता, अशिक्षा, निर्धनता तथा सामाजिक अत्याचारों से पीड़ित होकर अनचाहे अनेक नारियों को पेट पालने के लिए यह घृणित व्यवसाय अपनाने के लिए विवश होना पड़ता था। स्वामी दयानन्द वेश्यावृत्ति को आश्रय देने वाले भोगी–विलासी, अय्याशी पुरूषों को इसका उत्तरदायी मानते थे। नन्हींजान नामक वेश्या के चंगुल में फंसे जोधपुर के महाराज को महर्षि दयानन्द ने बहुत कड़ी फटकार लगाई थी। जिसके परिणामस्वरूप स्वामी दयानन्द को अपने प्राणों की आहुति भी देनी पड़ी थीं यह उनके जीवन की वेश्यावृति विरोध की प्रमुख घटना है। परन्तु ऋषि ने डटकर मुकाबला किया और किसी भी बुराई से कोई समझौता नहीं किया।

वर्तमान संदर्भ में नारी :- स्वामी दयानन्द ने नारी जागरण के लिए जिस वैचारिक एवं सामाजिक क्रांति का सूत्रपात किया इसके परिणाम हम सबके सामने है। कल्पना चावला सुनिता विलियम्स, संतोष यादव, बछेन्द्री पाल, सरोजनी नायडू, सानिया नेहवाल, सानिया मिर्जा, लता मंगेशकर, अरूणिमा, इन्द्रिरा गॉधी आदि भारत की विभिन्न क्षेत्रों की प्रसिद्ध महिलाओं ने अपनी काबलियत को सही साबित ही नहीं किया अपितु विश्व में भारत को गौरान्वित भी किया। शिक्षा, खेल, मनोंरजन, स्वास्थ, समाजिक कार्य सभी में आज महिलाओं ने अपने आप को साबित किया है। नारी आज प्रतिस्पर्धा के युग में पुरूषों से आगे निकलने लगी है।

निष्कर्ष :- स्वामी दयानन्द में प्रखर प्रतिभा और गहरी अर्न्तदृष्टि थी, साथ ही मानवीय संवेदना की बहुत व्यापक और आन्तरिक क्षमता थी। अपनी सूक्ष्म संवेदना के कारण ही उनको भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति का यथार्थ ज्ञान हुआ। स्वामी दयानन्द द्वारा प्रदत्त महिला जागृति का यह अभियान तभी सार्थक होगा जब स्वम् नारी बालक की प्रथम शिक्षिका बनने से लेकर सामाजिक चेतना को उचित दिशा देने का गुरूतर दायित्व वहन करेगी। नारी विषयक उपर्युक्त समस्त समस्याओं का मुख्य कारण अशिक्षा ही रहा है। आज नारी की स्थिति में परिवर्तन का संघर्ष काल चल रहा हैं। अब समय आ गया है कि मानव उत्थान, समाज उत्थान, मानव खुशहाली तभी आयेगी जब नारी स्वम् आत्मविश्वास से परिपूर्ण होकर, विवेकपूर्ण, चेतना के साथ स्वावलंबी बनेगी एवं अपनी शक्तियों को पहचानेगी। स्वामी दयानन्द के नारी सम्बंधी क्रांतिकारी कार्यक्रम आधुनिक प्रगतिशील संस्कृति में और भी अधिक प्रासंगिक सिद्ध हो रहे है। अतः निर्विवाद रूप से यह कहा जा सकता है कि वर्तमान युग की नारी उत्थान क्रान्ति के सर्वाधिक सक्रिय जन नायक महर्षि दयानन्द ही थे।

संदर्भ :-

1. मनुस्मृति 2. शतपथ ब्राह्मण 3. सत्यार्थ प्रकाश 4. वेद 5. औरत की दुनियॉ का सच, निर्मला पुतुल, जनवरी मार्च, 2006
6. शब्दार्णव – जुलाई – दिसम्बर 2017 7. योग के आधारभूत तत्व – उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय
8. कलेरिसस बदर द्वारा वुमन इन ऐन्शन्ट इण्डिया – द्रबनर्स ओरिएंटल सीरीज, रोतलेदगे, 2001
9. रामचरित्रमानस। सुन्दर काण्ड 58–3 10. राचरित्रमानस। सुन्दर काण्ड 4–161